International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विनय तत्व और गोस्वामी तुलसीदास की काव्य साधना

डॉ पंकज कुमार

सहायक आचार्य

हिंदी

हाडारानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सलूंबर

उदयपुर ;राजस्थानद्ध

313027

सार

तुलसीदास निश्चित रूप से समाजवादी थे, चूँकि उन्होंने जीवन भर राम की पूजा की, इसलिए वे उन्हें भगवान मानते थे। जीवन की वास्तविकताओं को समझने और अपने विश्वास की रक्षा के लिए तैयार होने के लिए ही वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे। उस काल में आक्रमणकारियों का प्रभाव तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों पर पड़ा। भारतीय जनता पर जोर–जबरदस्ती से अपना धर्म थोपा जा रहा था, यही कारण है कि तुलसीदास की समन्वय की भावना चरम पर दिखाई देती थी। वर्ष 1589 में, तुलसीदासजी का जन्म राजापुर गांव में हुआ था, जो उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है। आत्माराम दुबे उनके पिता और हुलसी उनकी माता थीं। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे था। तुलसीदासजी और रत्नावली, जो दीनबंधु पाठक की पुत्री थीं, के बीच विवाह हुआ था। हिंदी साहित्य के स्वर्ण युग के प्रसिद्ध भक्त, प्रबुद्ध कवि और दार्शनिक के रूप में महान कवि तुलसीदास ने निरंतर समन्वय की साधना की, जिससे आज भी भारतीय जनमानस प्रेरित है। तुलसीदास को अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से समन्वय स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। उनका विचार था कि समुदायों या भाषाओं में असहमति उन दिमागों का परिणाम है जो या तो महत्वहीन हैं या पाखंडी हैं, और परिणामस्वरूप, उन्होंने लगातार एक समन्वित दृष्टिकोण अपनाया। इस शोध कार्य के दौरान, गोस्वामी तुलसीदास ने एक लोक नेता के रूप में अपनी भूमिका में जिस समन्वय उपकरण का उपयोग किया था

खोजशब्धरू काव्य साधना, हिंदी साहित्य, रामचरितमानस

परिचय

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवि, भक्त, सुधारक एवं लोकनायक हैं। वे मध्ययुगीन भारतीय साहित्याकाश के उज्ज्वलतम रत्न हैं। वे एक आदर्श महात्मा एवं प्रतिभा सम्पन्न महाकवि हैं। वे उद्भट विद्वान् थे। संस्कृत, अवधि एवं ब्रजभाषा पर उनका समान अधिकार था। नाना पुराण निगमागम का उनका अध्ययन गहन था। वे अद्वितीय काव्य–कौशल के धनी थे। उनके जैसे प्रतिभाशाली कलाकार के हाथों निर्मित होकर रामकाव्य अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गया था। उनके परवर्ती रामकाव्य के रचयिता कवि उनके आलोक के सम्मुख फीके पड़ गये।

उनकी श्रेष्ठतम रचना श्रामचरितमानसश है जो हिन्दी साहित्य की ही नहींय अपितु भारत के समस्त वा्मय की सर्वोत्तम कृति है। यह एक अनुपम निधि है, जो उनकी अनन्त भाव राशि से ओतप्रोत है। यह एक महाकाव्य है, जिसमें जीवन–आदर्शों की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निर्व्याज झाँकी, सांस्कृतिक मूल्यों का रमणीय कोष एवं जीवन–व्यापारों का वैविध्यपूर्ण चित्रण है। इसमें दर्शन–मत की शुष्कता एवं भक्ति की सरसता का समन्वय है। किसी भी साहित्यकार की कृतियों का मूल्यांकन करने से पूर्व उसके व्यक्तिगत जीवन से परिचित होना आवश्यक है। तुलसी साहित्य को हृदयंगम तभी किया जा सकता है, जब हम उनके व्यक्तित्व से परिचित हों।

गोस्वामी तुलसीदास

तुलसीदास हिन्दी के महान कवि थे। रामचरितमानस उनकी महानतम रचना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल वाल्मीकीय रामायण को आर्य काव्य का आदर्श मानते हैं। 'मानस' में तुलसीदास धर्मोपदेष्टा और नीतिकार के रूप में सामने आते हैं। वह ग्रंथ एक धर्मग्रंथ के रूप में भी लिखा गया है। वास्तव में 'रामायण' धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अमृतमय रूप है तो 'रामचरितमानस' रामभक्ति की श्रद्धा की सरयू एवं भक्ति की भागीरथी है। 'रामचरितमानस' शाश्वत जीवन मूल्यों का आकाशदीप है। प्रत्येक संस्कृति के कुछ ऐसे शाश्वत नियम, उपनियम एवं परंपराएँ होती हैं, जो इसकी आधारशिला होती है। व्यक्ति के निजी जीवन, समाज एवं राष्ट्र को निर्मल, समुन्नत एवं आदर्शलक्षी बनाने के लिए ऐसे नियम विवेकपूर्ण जीवनरीति–नीति के मार्गदर्शक होते हैं। ऐसे मानदंड निर्धारित करने में धर्मग्रंथों, शास्त्रग्रंथों एवं जीवनमूल्यनिष्ठ साहित्यिक रचनाएँ सहायक होती हैं। तुलसीकृत रामचरितमानस उनकी विराट् प्रतिभा का साधनाजन्य वह पुरस्कार है, जो व्यक्ति के इहलोक एवं परलोक सुधारने की अद्वितीय क्षमता रखता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'अग्निपुराण' के वचन का उल्लेख करते हुए कहा है, ''नरत्वं दुलर्भं लोके विद्या सुदुर्लभा, कवित्वं दुलर्भं तत्र, शक्तिस्तत्र दुलर्भा।'' महाकवि तुलसीदास को उक्त चारों विभूतियाँ परिप्राप्त थीं और इन का सदुपयोग उन्होंने 'सर्वजनहिताय' ही किया।

विनय पत्रिका तुलसीदास के 279 स्तोत्र गीतों का संग्रह है। प्रारम्भ के 63 स्तोत्र और गीतों में गणेश, शिव, पार्वती, गंगा, यमुना, काशी, चित्रकूट, हनुमान, सीता और विष्णु के एक विग्रह विन्दु माधव के गुणगान के साथ राम की स्तुतियाँ हैं। इस अंश में जितने भी देवी–देवताओं के सम्बन्ध के स्तोत्र और पद आते हैं, सभी में उनका गुणगान करके उनसे राम की भक्ति की याचना की गयी है। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि तुलसीदास भले ही इन देवी–देवताओं में विश्वास रखते रहे हों, किंतु इनकी उपयोगिता केवल तभी तक मानते थे, जब तक इनसे राम भक्ति की प्राप्ति में सहयोग मिल सके।

विनय–तत्व

विनय–भाव के मूलार्थ को समझने के लिये सर्वप्रथम हमें विनय शब्द क व्युत्पत्ति को भी समझना आवश्यक है। यह शब्द संस्कृत की ष्नोष् पातु से बना है, जिसका अर्थ होता है ले जाना, नेतृत्व करना या प्राप्त कराना आदि षति एक उपसर्ग है। इसके पूर्व योग से धातु के मूलार्थ में षविशेषता ष का आगमन हो जाता है अर्थात् विशेष रूप से ले जाना, नेतृत्व करनाष अथवा दिवाना – आदि जहाँ विशेषता पूर्वक प्राप्ति का अवसर बने ष ष्हतायुधकोशष अभिधान–रत्नमाला के अनुसार णोअ प्रापणे इत्यस्माद्भावे ल्युट प्रत्ययः ष्नीष् धातु में पाषण प्राप्त कराने एवं ष्आनियन ले आने का अर्थ सन्निहित है। इसी ते ष्नायक नेता शब्द भी व्युत्पन्न होता है जो ष ले जाता या प्राप्ति कराता है– ष्नयर्ति प्राययतो तिष् । नीम्बुल के विधान से हो ष्नेताष् शब्द सिद्ध होता है। इसी प्रकार ष्लक्षणाष् व्यापार ते ष्नायकष् का अर्थ ष्श्रेष्ठ–ष भी होता है। इस प्रकार षविनयष् वह मनोभाव अथवा मनोवृत्ति है जो षविनयन अथात् नेतृत्व करे, उद्दिष्ट लक्ष्य का प्रापण कराने में समर्थ हो।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उद्देश्य

विनय तत्व और गोस्वामी तुलसीदास की काव्य साधना पर शोध का अध्ययन

गोस्वामी तुलसीदास के काव्यों में समन्वय साधना का अध्ययन

गोस्वामी तुलसीदास का स्वरूप –

ष्जंगम तुलसी–तरू लतै आनंद–कानन–खेत,

जाको कविता–मंजरी, राम–भेवर रस–लेत।ष

हमारे साहित्य के परम प्रकाशमय ज्योतिर्पिण्ड सूर और तुलसी का जीवन–वृत अभी तक अपेक्षाकृत अन्धकार में हो है। ये भक्त कविये और भक्त लोग अपने इष्ट देव के व्यक्तित्व के आगे अपना व्यक्तित्व प्रकाश में न आने देना ही श्रेयस्कर समझते थे। भक्त व्हामणि गोस्वामी तुलसीदास जी के जोवन वृत्त के सम्बन्ध में अन्तत्साक्ष्य और बहिस्तक्ष्य दोनों ही न्यूनाधिक रूप में उपलब्ध है। अन्तस्साक्ष्य में तो स्वर्य तुलसीदास जी के ग्रन्थ है जिनमें विद्वानों ने कुछ संकेत लक्षित किये हैं और बहिताक्ष्य ग्रन्थों में गोस्वाभी गोकुलनाथजी लिखित ष्दो सौ बावन वैष्णवन को वाताष, महात्मा नाभादास जी का भक्तमालष, बाबा वेणी माधव दास–कृत ष्गोताई चरितष, बाबा रघुवर दास द्वारा प्रणीत ष्तुलसी चरितष और प्रियादास जो लिखित ष्भक्तमाल को टीका प्रमुख हैं। इन सभी ग्रन्थों में ऐतिहासिकता की अपेक्षा धार्मिक भाव को प्रधानता है । ष्गोताई चरितष और तुलतो चरितष को तो प्रमाणिकता में भी सन्देह किया जाता है, अतः स्वयं गोस्वाभो जो को गवाही पर हमको अधिक निर्भर रहना पडता है ।

विनय–तत्व का स्वरूप

विनयष का भाव विनय–भावी व्यक्ति को उसके उदिदष्ट लक्ष्य तक नेतृत्व ५ रता है। भारतीय देव–समाज में प्रथम पूज्य ष्गणेशष को विना–यक भो कहते हैं विशिष्टो नायकः । विघ्नराजष विघ्नेश आदि नामाभिधेयों ते यह भी प्रकट होता है कि वे विघ्नों को स्वामी–रूप में बाधित और निष्ट भी करते हैं।

संस्कृत में ष्नतंष नम क्त, ष्नतिष और ष्विनतिष विशेष नम्रता सिरहेकारिता शब्द भी निष्पन्न होते हैं जो ष्नमष धातु से निर्मित और विकसित है। ष्नयष राज–नय, कूटनीति आज के राज–कर्म और प्रशासन को एक अति आवश्यक वृत्ति के कारण, राजनीति में अति आवश्यक मानी गयी है। इसके कूर–वाताक्रम में नम्रता और शिष्टाचार का आचरण अतोव अपेक्षित होता है । ष्नतष का अथात् कुटिलता एवं वक्रता के भौतिक अर्थ से आगे बढ़कर ष्नतष के ष्नति–भावष में ष्नम्रताष पोलाइटनेस को अर्थ छाया भो सम्मिलित है । ष्नोतिष में चातुर्थ्य के साथ, व्यवहार पद्धति एवं शिष्ट सौजन्य भो एक ग्रहणीय पक्ष होता है । मूल रूम त तिमय वह भाव–वृत्ति है जो अपने प्रभावकता– प्रभावता से अनुसरणकता को उसके इस तक ले जाने का निर्वाध मार्गदर्शिका है अयानुर्तधान एवं अर्थ–विस्तार । विचिय छाया के अनुचिन्तन और अनुमंथ. ते ष्नोष और ष्नयष धातुएँ भले हो दो अलग धातुएँ किया–मूल हो, पर सामाजिक व्यवहार–समुच्चय और क्रिया–साधन के परिप्रेक्ष्य में इनके भाव बहुत कुछ समानान्तर एवं किसी अर्थ में एक दूसरे के परिपूरक अनुपूरक रूप में भो दृष्टिगत होते हैं ।

तुलसीदास की समन्वय भावना :–

समन्वय शब्द सामान्यतः दो अर्थों में मैं लिया जाता है। अपने विस्तृत और व्यापक अर्थ में वह संयोग अथवा पारस्परिक संबंध

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के निर्वाह का द्योतक है। जब हम सांख्य और वेदांत अथवा निर्गुण और सगुण के समन्वय की बात करते हैं। तब हमारा अभिप्राय होता है, इन दोनों विचार धाराओं में सामंजस्य की स्थापना। इन दोनों ही दृष्टियों में तुलसीदास समन्वयवादी है। समन्वय भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। समय–समय पर इस देश में कितनी ही संस्कृतियों का आगमन हुआ और आगे बढ़ा। परंतु वह घुल मिल दृ कर एक हो गई। कितनी ही दार्शनिक धार्मिक।, सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक साहित्यिक व सोंदर्य मूलक विचारधारा का विश्वास हुआ। किंतु उनकी परिणति संगम के रूप में हुई। यह समन्वय भावना का ही परिणाम है कि नास्तिक बुद्धा ने राम को बोधिसत्व मान लिया। और आस्तिक वैष्णवों ने बुद्ध के अवतार रूप में प्रतिष्ठा की।

अर्थ दृ काम और धर्म दृ :–मोक्ष में प्रवृत्ति और निवृत्ति में साहित्य और जीवन में समन्वय स्थापित करने के विराट प्रयत्न किए गए। अनेकता में एकता की स्थापना की गई। धर्म दर्शन और समाज सुधार के क्षेत्र में गौतम बुद्ध लोकनायक थे। उनके द्वारा प्रतिष्ठित माध्यम प्रतिपदा त्याग और भोग के समन्वय का ही मार्ग है। लोकदर्शी तुलसी ने जनता के हृदय में धड़कन को पहचाना और रामचरितमानस के रूप में वह आदर्श प्रस्तुत किया है। जिसमें कवित्व और भक्ति दर्शन का अद्भुत समन्वय है। समन्वय सिद्धांत का व्यवस्थित निरूपण और कार्यान्वयन मदारी का वृक्ष नहीं है। वह प्रत्यक्ष अनुभव सूक्ष्म शिक्षण अन्वेषण और गहन अनुशीलन का सम्मिलित परिणाम है। जीवन स्वयं समझौता है। वे यौवन की कामाशक्ति के शिकार भी हुए थे। और वैराग्य की पराकाष्ठा पर पहुंचकर आत्माराम भी हो गए थे। उनकी समन्वय साधना बहुमुखी है।

द्वैत –अद्वैत :– तुलसी का दार्शनिक समन्वयवाद अत्यंत विवाद का विषय रहा है। तुलसी के युग में वेदांत का प्रभुत्व था। उसके भीतर भी दो प्रकार के संघर्ष थे। पहला सभी वैष्णव आचार्य शंकर के निर्गुण ब्रह्माबाद और माया के विरोधी थे। दूसरा सभी अदैतवाद मध्व के द्वैतवाद के विरोधी थे। जहां अद्वैतवादियों और वैष्णव वेदान्तियों में मतभेद है वहां उन्होंने समन्वयवादी दृष्टि से काम लिया है। माया अविद्या है उसके अस्तित्व के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। सगुण ब्रह्मा ही अवतार लेता है। एकमात्र निर्गुण ब्रह्म ही सत्य है। जीव जगत और ईश्वर सब मिथ्या है केवल ज्ञान ही मुक्ति का साधन है।

निर्गुण और सगुण :– निर्गुण और सगुण का विवाद दो क्षेत्रों में था। दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में और भक्ति के क्षेत्र में। शंकराचार्य निर्गुण ब्रह्मवाद को मानते थे। रामानुज और वल्लभ सगुण ब्रहम्मा को। तुलसी ने दोनों का समन्वय करते हुए राम को निर्गुण– सगुण कहा है। वस्तुतः राम एक है। वह निर्गुण और सगुण निराकार और साकार , व्यक्त और अव्यक्त है। निर्गुण राम ही भक्तों के प्रेम वश सगुण रूप में प्रकट होते हैं।

विद्या और अविद्या माया :– अद्वैतवाद में माया और अविद्या पर्यायवाची है। वैष्णव आचार्य ऐसा नहीं मानते , वे माया को स्वभावत सगुण ब्रह्मा की शक्ति मानते हैं। तुलसी की विद्या माया शंकराचार्य की माया से भिन्न है। क्योंकि वह जगत की रचना करती है , और भक्तों का कल्याण भी करती है। उसके अनुसार माया की भाव रूपा अभिन्न शक्ति है।

माया और प्रकृति :– साख्य योग के अनुसार स्वतंत्र प्रकृति सृष्टि का कारण है। यह स्थुल जगत उसी का विकार है। अद्वैतवाद में माया को विच्छेप दृ शक्ति का कार्य माना गया। वैष्णवों ने पर ब्रह्मा और उसकी शक्ति माया द्वारा विश्व का निर्माण माना। सृष्टि प्रक्रिया में तुलसी ने वैष्णव दृ वेदांत की माया और साथियों की प्रकृति का समन्वय किया। उन्होंने प्रकृ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ति को राम के अधीन और माया के अभिन्न मानकर दोनों में एक सूत्रता स्थापित की।

जगत की सत्यता और असत्यता :– साख्य योग वैष्णव वेदांत आदि ने जगत की सत्यता स्वीकार की गई है। वेद विरोधी आतमनादि और अनीश्वरवादी बौद्ध तुलसी की दृष्टि में सर्वथा तिरस्कृत है। जिसके विरुद्ध राम को विश्वरूप तथा जगत को राम का अंश बताकर उन्होंने जगत की सत्यता प्रतिपादित की है। क्योंकि राम से अभिन्न जगत मिथ्या नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में तुलसी ने द्वैतवाद और अद्वैतवादी मतों का समन्वय किया है। राम और जगत में तत्वतः अभेद है।

जीव का भेद –अभेद :– तुलसी का जीव विषयक सिद्धांत वैष्णव दृ वेदांतिओं के मतों का समन्वय है। तुलसी ने भेदवाद और आप अभेदवाद दोनों का समन्वय किया है। जीव ईश्वर का अंश मात्र है वह माया का स्वामी नहीं है। मुक्त होने पर ईश्वर का स्वरूप प्राप्त कर लेता है, किंतु ऐश्वर्य को नहीं।

कर्म दृ ज्ञान दृ भक्ति :– जीव की पूर्णता इन तीनों में समन्वय में है। वही साधना सिद्धिदायिनी होती है जो साधक की पूरी सत्ता के साथ की जाए। सत्कर्म के बिना चित निर्मल नहीं हो सकता। और मूल से युक्त चित ज्ञान भक्ति का उदय असंभव है। अतः तुलसी ने तीनों के समन्वय पर बल दिया है।

तुलसी काव्य में विनय का स्वरूप

राम चरित मानस में विनयवृत्ति और उसकी भावदशा रू–

षविनयष दास्य–भाव का एक अनुशासक पक्ष भी है। मयादां लोक–मंगल और लोक–संगह से मिलकर वह तुलसी में भावत्व प्राप्त करता है । रामचरितमानस का भारतीय साहित्य में अद्वितीय स्थान है। रामायण और महाभारत के साथ–साथ रामचरितमानस को भी हिन्दू जनमानस में खूब प्रसिद्धि मिली। जोवन्त लोकप्रियता और अपरिसीम प्रभाव को दृष्टियों ते मानप्त अदितोय है। गोता, बाइविल और कुरान के साथ– साथ मानप्त संसार का पूज्यतम ग्रन्थ है। धर्मग्रन्थ और महाकाव्य के द्विविध गौरव ते सम्पन्न मानव सर्वरस निष्पति और अलंकरण में एक अतुलनीय ग्रन्थ है । भक्तिरत और भक्ति दर्शन की उभ्य दृष्टियों से मानत संसार का अनठा ग्रन्थ है। महात्मा गाँधों ने इसे भक्तिमार्ग का सर्वोत्तम ग्रन्थ ह है । एक किस ने इसे ष्समग भक्ति साहित्य में सर्वश्रेष्ठ कृति माना है रामधारी सिंह षदिनकरष ने तुलसीदास जी को विश्व का सर्वश्रेष्ठ कवि माना है। विशद मानव धर्म, सार्वभौम दर्शन और मनोहारी काट्यकला का प्रयाग रामचरित मानस संसार साहित्य का एक वैसा ही सवोप रि गौरवग्रन्थ है, जैसा श्वग्वेद या बाइविल या इलियड या कुरान ।

ष्रामचरितमानसष उच्चकोटि को कगिरव से सम्पन्न महाकाव्य है। वर्णनात्मकता को अत्यन्त ललित एवं प्रभावी रूप प्रदान करने में तुलसी प्रायः सभी स्थलों पर सझल हुए हैं, तथापि बाल–कांड, अयोध्या– काण्ड एवं उत्तरकाण्ड को सवोपरिता एक अधियतम स्वीकृत तथ्य है। ष्बाल काण्ड,ष ष्रामचरितमानतष का कला–काण्ड है, ष्अयोध्या काण्डष ष्भाव–काण्ड, उत्तर काण्डष दर्शन–काण्ड । बालकाण्ड, रामचरितमानत का मुख है ष्अयोध्या काण्ड हृदय, ष्उत्तरकाण्डष मस्तिष्क कहा जाय तो बहुत आयुक्ति न होगी ।

नानापुराण निगभागमा गमसम्मतै, पद
रामायण निगदितै, क्वचिदन्यतोडपि ।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भाषा निबन्ध भति मन्जुलमातनोति ।।

उपसंहार

तुलसीदास मूलतः समन्वयवादी थे। उन्होंने उपर्युक्त क्षेत्रों के अलावा अन्य बहुत से क्षेत्र में समन्वय स्थापित किया । इस प्रकार अपने युग, परिस्थितियों की माँगों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने साहित्य में भक्ति, धर्म, भाषा, साहित्य, पारिवारिक जीवन, समाज आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त संघर्ष और वैमनस्य को दूर करने के लिए जो प्रयास किए हैं। वह अतुलनीय है। और इस प्रयास से उन्होंने भारतीय जनता के दिल में, साहित्य में जो मुकाम हासिल किया है, वह कोई और लेखक आज तक नहीं कर पाया। इन सबके अलावा जहां–जहां तुलसी को सांस्कृतिक क्षेत्र में विरोध की झलक मिली है, उन्होंने उसे दबाने की कोशिश की है. यद्यपि भारतीय संस्कृति अपने आप में समन्वयवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। समय–समय पर इस देश में अनेक संस्कृतियां आईं और उभरीं, लेकिन वे आपस में मिल कर एक हो गईं। कितनी दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक और सौंदर्यवादी विचारधाराओं का विकास हुआ, लेकिन वे एक संगम के रूप में परिणत हुईं। लेकिन फिर भी तुलसी ने उसमें मौजूद कुछ विरोधी तत्वों को समेटने की कोशिश की है, जैसे कि जीवन, राज्य वर्ग की संस्कृति, आम लोगों और कोल–किरातों को तुलसी ने उसी तरह चित्रित किया है, लेकिन में राम के संबंध में, उनके पास यह सब है। जीवन शैली को एकीकृत किया गया है। और सबसे महत्वपूर्ण बात – हिंदू संस्कृति के साथ मुस्लिम संस्कृति का एकीकरण। सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति के कट्टर अनुयायी होने के बावजूद तुलसीदास ने अपने दृष्टिकोण को उदार रखते हुए अपनी कविता को आगे बढ़ाया है। और इसीलिए राम की सेवा में भेजी गई 'विनय पत्रिका' का विधान मुगल बादशाह को भेजी गई प्रार्थना के अनुसार किया गया है। इसके साथ ही अरबी–फारसी की शब्दावली का भी भरपूर उपयोग किया गया है।

संदर्भ सूची :–

हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, संस्करण–2010, पृष्ठ सं.– 98

रामचरितमानस, बालकाण्ड, 23/1

हिन्दी साहित्य का विकास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मलिक एण्ड कम्पनी प्रकाशन, संस्करण–2009, पृष्ठ सं.– 115

रामचरितमानस, लंकाकाण्ड, 2/8

रामचरितमानस, उनरकांड, 98/1–2

रामचरितमानस, अयोमयाकाण्ड, 243/3

वही, बालकाण्ड, 8/1–2

वही, बालकाण्ड, दोहा सं,– 192

हिन्दी साहित्य का विकास – आचार्य रामचन्ं शुक्ल, मलिक एण्ड कम्पनी बकाशन, संस्करण–2009, पृष्ठ सं,–113

हिन्दी साहित्य की बवृतिया!–डण्.जयकिशन बसाद खंडेलवाल–पृ.सं. 223

हिन्दी साहित्य की बवृतिया!–डण्.जयकिशन बसाद खंडेलवाल–पृ.सं. 227

भक्तमाल – पृ0 719, छं0सं0 115 (मीरा संगीत अंक–पृ0 11)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विनय पत्रिका – पृ0सं0 45

क्रमिक पुस्तक मालिका भाग–3

तुलसी के भक्त व्यात्मक गीत (तुलसी काव्यकला और दर्शन–पृ0सं0 87)

रहीम खान, पाटन (2022) 20. विनय पत्रिका में राम भक्ति तत्व एवं आत्मा निवेदन।

सिंह, हरदीप (2023) 19वीं सदी के महान कवि रतन हरि के भक्तिपूर्ण छंद, तुलसीदास विनय पत्रिका के बराबर। 26. 90–91.